

श्रीमान सहायक कलक्टर एवं एस डी ओ महोदय

गुडामालानी जिला बाडमेर ।

वादीगण:-

1. मांगा वल्द माधा उम्र 57 वर्ष
2. छगना पुत्र श्री खेमा उम्र 63 वर्ष
3. भारमल पुत्र श्री खेमा उम्र 67 वर्ष
4. हिमता पुत्र श्री खेमा उम्र 38 वर्ष
5. होती पुत्र श्री खेमा उम्र 36 वर्ष
6. टीपु पत्नी खेमा उम्र 83 वर्ष

जाति गुरुडा निवासी सोनगिरी की ढाणी

तहसील गुडामालानी जिला बाडमेर

बनाम

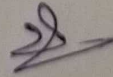
प्रतिवादीगण :-

1. सरपंच ग्राम पंचायत आमलियाला पंचायत समिति गुडामालानी जिला बाडमेर
2. ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत आमलियाला प.स. गुडामालानी ।
3. राजस्थान सरकार जरिये तहसीलदार गुडामालानी ।

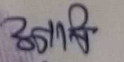
राजस्व वाद अन्तर्गत धारा 188 रा0 का0 अधिनियम 1955

महोदयजी ,

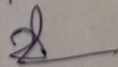
वादीगण का वाद निम्न प्रकार है कि :-

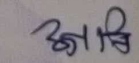





मांगा

1. कि वादी की खातेदारी भूमि खसरा संख्या 275 रकबा 40-08 बीघा मौजा सोनगिरी की ढाणी तहसील गुडामालानी में आया हुआ है। जिसमें वादी का कब्जा कास्त है तथा वादी का रहवासी घर बना हुआ है, तथा वादीगण वर्तमान में निवास करता है, नकल जमाबंदी व नक्शा की प्रमाणित प्रति साथ पेश है।
2. कि उपरोक्त खेत जो वादपत्र के पद संख्या 1 में अंकित है जिसके सेढा सेढ खसरा संख्या 275/2 रकबा 1-03 बीघा राजस्थान सरकार के पक्ष में रास्ता दर्ज है लेकिन प्रतिवादीगण मौके पर वादीगण खेत खसरा संख्या 275 में से सड़क निकाल रहे हैं तथा वादीगण खातेदारी खेत को खुर्द बुर्द मेरी खातेदारी भूमि में से पक्की सी सी रोड निकालने पर आमदा है। प्रतिवादीगण सड़क का निर्माण करने हेतु राजनैतिक द्वेष भावना से वादीगण खातेदारी खेत को खुर्द बुर्द करने हेतु आमदा है।
3. कि प्रतिवादी संख्या 1 व 2 सदभावी काश्तकारों की जमीन पर कब्जा कर जमीन हड़पने की कोशिश करते हैं तथा बिना किसी राजस्व रिकॉर्ड में आम रास्ता दर्ज नहीं होने के बावजूद भी वादीगण खातेदारी भूमि में से रास्ता में से रास्ता निकालने व कच्चा पक्का निर्माण कार्य कर सफल हो गये तो फिर कब्जा हटाना मुश्किल हो जायेगा इसलिए वादी को यह स्थाई निषेधाज्ञा का वाद लाना पडा जिस हेतु यह स्थाई निषेधाज्ञा का वाद श्रीमानजी के समक्ष पेश है।
4. कि यदि प्रतिवादी गण को स्थाई निषेधाज्ञा से पाबन्द नहीं किया गया तो वो वादी की कीमती जमीन पर पक्की सड़क कर कब्जा कर कच्चा पक्का निर्माण कर सड़क बना लेगा। वादी सदभावी काश्तकार है तथा कानून में विश्वास रखता है वादी के पास स्थाई निषेधाज्ञा के वाद के अलावा ओर कोई विकल्प नहीं है। वादी रिकॉर्डेड खातेदार है इसलिए प्रथम द्रष्टया मामला अपूरणीय क्षति एवं सुविधा का सन्तुलन वादी के पक्ष में है यदि प्रतिवादी गण इसमें सफल हो गया तो सबसे अधिक क्षति वादी को होगी।




मौजा

